❍ 08 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *एक की ही याद में रहे ?*

➢➢ *देहि अभिमानी रहने की मेहनत की ?*

➢➢ *दुःख की लहरों से न्यारे रह प्रभु प्यार का अनुभव किया ?*

➢➢ *माया के बहुरूपों को सहज ही पहचाना ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन। कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। जितना ही कार्य बढ़ता जाये उतना ही हल्कापन भी बढ़ता जाये।* कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे लेकिन मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं- *यह अभ्यास बढ़ाओ तो सम्पन्न कर्मातीत सहज ही बन जायेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं एकरस रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी सदा एकरस स्थिति में स्थित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना। *अनुभवी आत्मायें बन गई ना। सब दुनिया के रस अनुभव कर लिये। अब इस ईश्वरीय रस का अनुभव किया, तो वह रस क्या लगते है? फीके लगते हैं ना। जब है ही एक रस मीठा तो एक ही तरफ अटेन्शन जायेगा ना।*

〰✧ *एक तरफ मन लग ही जाता है, मेहनत नहीं लगती है। बाप का स्नेह, बाप की मदद, बाप का साथ, बाप द्वारा सर्व प्राप्तियां सहज बना देती है। हरेक इसी अनुभव से आगे बढ़ रहे हो, यह देख बाप भी हर्षित होते हैं।|*

〰✧ जितना भी देश में दूर स्थान पर हो, उतना ही दिल में नजदीक हो। बापदादा सेकेण्ड में सभी बच्चों को आह्वान कर इमर्ज कर लेते हैं, भल वह कितना भी दूर हो। आपको भी अनुभव होता है ना - बाप अमृतवेले कैसे मिलन मनाते हैं!

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

>> *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ अपने आपको सफलता के सितारे हैं - ऐसे अनुभव करते हो? *जहाँ सर्व शक्तियाँ हैं, वहाँ सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार है।* कोई भी कार्य करते हो, चाहे शरीर निर्वाह अर्थ, चाहे ईश्वरीय सेवा अर्थ, कार्य में कार्य करने के पहले यह निश्चय रखो।

〰✧ निश्चय रखना अच्छी बात है लेकिन प्रैक्टिकल अनुभवी आत्मा बन 'निश्चय और नशे में रहो'। *सर्वशक्तियाँ इस ब्राह्मण जीवन में सफलता के सहज साधन हैं।* सर्व शक्तियों के मालिक हो इसलिए किसी भी शक्ति को जिस समय ऑर्डर करो, उस समय हाजिर हो।
जैसे कोई सेवाधारी होते हैं, सेवाधारी को जिस समय ऑर्डर करते हैं तो सेवा के लिए तैयार होता हैं। ऐसे सर्व शक्तियाँ आपके ऑर्डर में हो।

〰✧ *जितना-जितना मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होंगे उतना सर्वशक्तियाँ सदा ऑर्डर में रहेंगी।* थोडा भी स्मृति की सीट से नीचे आते हैं तो शक्तियाँ ऑर्डर नहीं मानेंगी। सर्वेन्ट भी होते है तो कोई ओबीडियेन्ट होते हैं, कोई थोडा नीचे-ऊपर करने वाले होते हैं। तो आपके आगे सर्व शक्तियाँ कैसे हैं? *ओबिडियेन्ट हैं या थोडी देर के बाद पहुँचती है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

〰✧ *जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जान बूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी। इसलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत ज़रूरी है।* कोई भी रूप की माया आये, समझ तो है ही। *एक सेकण्ड में विदेही बन जायेंगे तो माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे कोई मरा हुआ व्यक्ति हो, उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ना* विदेही माना देह से न्यारा हो गया तो देह के साथ ही स्वभाव, संस्कार, कमजोरियाँ सब देह के साथ हैं, और देह से न्यारा हो गया तो सबसे न्यारा हो गया। इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, *इसमें कण्ट्रोलिंग पावर चाहिए। मन को कण्ट्रोल कर सकें, बुद्धि को एकाग्र कर सकें। नहीं तो आदत होगी तो परेशान होते रहेंगे। पहले एकाग्र करें तब ही विदेही बनें।*

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बुद्धि को शुद्ध रखने के लिए, खानपान की परहेज रखना*"

➳ _ ➳ मधुबन के प्रांगण में घूमते हुए मै आत्मा... मीठे बाबा की यादो में मगन हूँ... अपने घर में टहलते हुए मै आत्मा... *असीम शुख की अनुभूति कर रही हूँ... और सोच रही हूँ कैसे मुझे चलते चलते भगवान मिल गया है.*.. और जीवन कितना खुबसूरत प्यारा हो गया है... मै आत्मा ईश्वरीय मिलन से पहले क्या थी... आज भगवानं से मिलकर कितनी दिव्य और पवित्र बन गयी हूँ... *मेरा पवित्र मन और मेरी दिव्य बुद्धि आनन्द और सुख से भरपूर हो गयी है... मेरा जीवन पवित्रता का पर्याय बनकर.*.. हर दिल को आकर्षित कर रहा है... और हर दिल... प्यारे बाबा की बाँहों में आने को आतुर हो गया है... अपने सुंदर भाग्य को यूँ सोचते हुए मै आत्मा... मीठे बाबा की कुटिया में प्रवेश करती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से सजाकर देवताई सुखो से सुसज्जित करते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वर पिता ने सच्चे रत्नों से सजाकर, जो दिव्यता और पवित्रता से निखारा है... तो इस देवताई श्रंगार की जीजान से सम्भाल करो.*.. बुद्धि की शुद्धता के लिए खानपान की शुद्धि का पूरा ख्याल करो... पवित्र ब्राह्मण बनने का जो सोभाग्य प्राप्त हुआ है...तो अपवित्रता भरा भोजन कभी स्वीकार न करो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के असीम प्यार में खुशियो में खिलते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपकी गोद में बैठकर,देवताई हुनर सीख कर... कितनी अनोखी बनती जा रही हूँ.*.. पहले मेरा जीवन कितना मूल्य विहीन और विकारी था... और *आज आपको पाकर तो मेरी हर अदा दिव्यता की झलक दिखा रही है.*.. मीठे बाबा मै आत्मा हर पल अपनी दिव्य बुद्धि की सम्भाल रख आपकी मीठी यादो में मगन हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को सच्ची खुशियो और गुणो की प्रतिमूर्ति बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मीठे बाबा की यादो में जो बुद्धि रुपी पात्र को सोने जैसा बनाया है... उसकी चमक को सदा बरकरार रखो...

अन्न की शुद्धि से बुद्धि पात्र की पवित्रता को सदा सजाये रखो... तभी इसमे सच्चे ज्ञान रत्न ठहर सकेंगे... और यह दिव्य बुद्धि ही प्यारा साथी बनकर... अनन्त सुखो की अनुभूति कराकर... मीठे बाबा की यादो में डुबो देगी...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की बाँहों में पवित्रता से सज संवर कर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा कितनी भाग्यशाली हूँ कि *स्वयं भगवान मुझे सजाकर, यूँ पवित्रता से दमका रहा है... मुझे जीने के सारे हुनर सिखा कर, देवताई संस्कारो से भर रहा है.*.. मीठे बाबा आपने मेरे जीवन में यूँ दिव्यता की छटा बिखेर कर.. मुझे क्या से क्या बना दिया है... मै आपकी श्रीमत सदा मेरे संग है..."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को सतयुगी सुखो का मालिक बनाकर कहते है :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... सदा श्रीमत का हाथ पकड़कर सुखी और निश्चिन्त जीवन को जीते रहो... *ईश्वरीय राहों पर चलकर, खानपान की शुद्दि का पूरा पूरा ख्याल रखो.*.. ईश्वरीय प्यार और याद में जो बुद्धि इतनी पावन बनकर... निखरी है, तो हर पल इस प्यारी दिव्य बुद्धि का ध्यान रख, सदा शुद्ध अन्न को प्राथमिकता दो... *इस दिव्य बुद्धि की बदौलत ही तो ईश्वर पिता को जाना है... ज्ञान रत्नों को पाया है... और ईश्वरीय प्यार को महसूस किया है.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा को जीवन में पाकर, आनन्द से सराबोर होकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे...मै आत्मा आपकी प्यारी गोद में आकर... विकारी जीवन, अशुद्ध खानपान से पूरी तरहा मुक्त हो गयी हूँ... *मेरी दिव्य बुद्धि ने ही तो मुझे आपकी बाँहों में भरा है... इस मीठी बुद्धि का मै आत्मा हर साँस से ख्याल रख रही हूँ.*.. और सदा शुद्ध भोजन से इसकी पवित्रता को कायम रख रही हूँ..."मीठे बाबा से श्रीमत पर चलने का सच्चा वादा करके.... मै आत्मा इस धरा पर लौट आयी...

|| 7 || योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- इस विनाशकाल में दिल की सच्ची प्रीत एक बाप से रखनी है*"

➳ _ ➳ अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप को धारण कर मैं आकाश में विचरण करता हुआ साकारी दुनिया के रंग बिरंगे, मन को मोहने वाले मायावी दुनिया के नजारे देख रहा हूँ। *इस मायावी दुनिया की झूठी चकाचौंध को सच समझने वाले कलयुगी मनुष्यों को देख मुझे उन पर रहम आता है और मन मे ये विचार आता है कि कितने बेसमझ हैं बेचारे ये लोग जो देह और देह की दुनिया को सच माने बैठे हैं*।

➳ _ ➳ अपना सारा समय देह के झूठे सम्बन्धों के साथ प्रीत निभाने में जुटे हैं। अपने और अपने परिवार के लिए भौतिक सुख, सुविधाओं को जुटाने में ही अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ गंवाते जा रहे हैं। इस बात से कितने अनजान है कि देह, देह की दुनिया और देह के ये सब सम्बन्ध समाप्त होने वाले है। *इस विनाशकाल में केवल एक परमात्मा के साथ प्रीत ही इस जीवन की डूबती नैया को पार लगा सकती है*।

➳ _ ➳ दुनिया के झूठे सहारों का किनारा छोड़ परमात्मा बाप को सहारा बनाने वाले ही मंजिल को पा सकेंगे बाकि तो सब डूब जायेंगे। मन ही मन यह विचार करते हुए एकाएक मेरी आँखों के सामने महाविनाश का भयंकर दृश्य उभरता है। *मैं फ़रिशता अपने दिव्य चक्षुओं से देख रहा हूँ कहीं भयंकर तूफ़ान में गिरती हुई बड़ी - बड़ी बिल्डिंगे और उनके नीचे दबे हुए लोगों को चीखते, चिल्लाते हुए*। कहीं बाढ़ का भयंकर दृश्य जिसमे हजारों फुट ऊंची पानी की लहरें सब कुछ तबाह करती जा रही हैं। *कहीं ज्वालामुखी का लावा तीव्र गति से आते हुए सब कुछ जला कर भस्म करता जा रहा है*। खून की नदिया बह रही है। चारों और लोगों के मृत शरीर पड़े हैं।

➳ _ ➳ विनाश के इस भयानक दृश्य को देखते - देखते एकाएक मुझे मेरा ब्राह्मण स्वरूप दिखाई देता है। मैं देख रहा हूँ कि अपने ब्राह्मण स्वरूप में मैं

स्थित हूँ। *मेरी आँखोंके सामने मेरे सम्बन्धी एक - एक करके काल का ग्रास बन रहें हैं*। मैं साक्षी हो कर हर दृश्य को देख रही हूँ। मेरी बुद्धि की तार केवल मेरे शिव पिता के साथ जुड़ी हुई है। ऐसा लग रहा है जैसे मैं देह और इस देह से जुड़े हर सम्बन्ध से नष्टोमोहा बन चुकी हूँ। *अपने इस नष्टोमोहा ब्राह्मण स्वरूप को देख कर इस स्वरूप को जल्द से जल्द पाने का लक्ष्य रख मैं फ़रिशता अब साकारी दुनिया को छोड़ सूक्ष्म लोक की ओर चल पड़ता हूँ*।

➳ _ ➳ सफेद चांदनी के प्रकाश से प्रकाशित सूक्ष्म वतन में अव्यक्त ब्रह्मा बाबा अपने सम्पूर्ण फ़रिशता स्वरुप में मेरे सामने खड़े है और उनकी भृकुटि में शिवबाबा चमक रहें हैं। *बापदादा के मस्तक से आ रही लाइट और माइट चारों और फैल कर पूरे सूक्ष्म वतन को प्रकाशित कर रही है*। सर्वशक्तियों के शक्तिशाली वायब्रेशन इस पूरे वतन में चारों और फैले हुए हैं। मैं फ़रिशता धीरे - धीरे बाबा के पास पहुंचता हूँ। *बापदादा के मस्तक से आ रही शक्तियों की लाइट और माइट अब सीधी मुझ फ़रिश्ते पर पड़ रही है और मैं फ़रिशता सर्वशक्तियों से भरपूर होता जा रहा हूँ*। अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख कर बाबा मुझे "नष्टोमोहा भव" का वरदान दे रहें हैं।

➳ _ ➳ बापदादा से वरदान लेकर और सर्वशक्तियो से सम्पन्न बन कर मैं फ़रिशता अब वापिस साकार लोक की ओर प्रस्थान करता हूँ। अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी तन के साथ मैं अपने साकारी तन में प्रवेश कर जाता हूँ। अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हूँ। *यह देह और देह की दुनिया अब खत्म होने वाली है, इस बात को सदा स्मृति में रखते हुए इस विनाशकाल में दिल की सच्ची प्रीत केवल अपने शिव बाप से रखते हुए अब मैं हर बात से स्वत: ही उपराम होती जा रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं दःख की लहरों से न्यारे रह प्रभ प्यार का अनभव करने वाली आत्मा

हूँ।*

✺ *मैं खुशी के खजानों से सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं त्रिकालदर्शी आत्मा हूँ ।*
✺ *मै त्रिनेत्री आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा माया के बहुरूपों को सहज ही पहचान लेती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *अनुभवी हो, जब कोई अच्छा कर्म करते हो तो कर्म का फल उसी समय प्रत्यक्ष रूप में खुशी, शक्ति और सफलता के कारण डबल लाइट रहते हो क्योंकि याद रहता है बाप के साथ से कर्म किया।* और अगर अभी कोई विकर्म होता है तो उसका पश्चाताप बहुत लम्बा है। वैसे *अभी विकर्म तो कोई होना नहीं चाहिए, वह तो टाइम अभी बीत गया,* लेकिन अभी कोई व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी न हो। क्योंकि व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी बहुत धोखा देता है। जैसा संग वैसा रंग लग जाता है।

कई बच्चे बड़े चतुर हैं कहते हैं हम तो संग नहीं करते, लेकिन वह मेरे को नहीं छोड़ते, मैं नहीं करती, वह नहीं छोड़ते। तो क्या किनारा करना नहीं आता? *अगर कोई बुरी चीज दे तो आप लेते क्यों हो! लेने वाला नहीं लेगा तो देने वाला क्या करेगा?* इसीलिए व्यर्थ सम्बन्ध और सम्पर्क भी एकाउण्ट खाली कर देता है।

➳ _ ➳ 2. बापदादा को बच्चों के भिन्न-भिन्न खेल देख हँसी भी आती है, रहम भी आता है और *बापदादा उस समय टच करता है, यह भी अनुभव करते हैं। नहीं करना चाहिए, श्रीमत नहीं है, यह बाबा समान बनना नहीं है, टच भी होता है लेकिन अलबेलापन सुला देता है।* इसलिए अभी स्व के प्रति ज्यादा खजाने खर्च नहीं करो। *जमा भले करो लेकिन खर्च नहीं करो। सेवा भले करो, व्यर्थ खर्च नहीं करो। बहुत जमा करना है ना!*

✺ *ड्रिल :- "व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क से किनारा करना"*

➳ _ ➳ व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करती मैं आत्मा... बैठी हूँ... बाबा के कमरे में... मन के तार एक बाप से जुड़ते ही... पहुँच जाती हूँ... एक ऊँची पहाड़ी की चोटी पर...शांत... खुशनुमा... वातावरण... ठंडे ठंडे पवन के झोंको के बीच बैठी मैं आत्मा... देख रही हूँ... *बापदादा के अलौकिक... दिव्य रूप... का आगमन... इस पावन धरती पर...* प्रकृति भी बापदादा के स्वागत में सुगन्धित फूलों की बौछार कर रही हैं... मैं दौड़ कर बाबा के गले लग जाती हूँ... बापदादा अपना रूहानी हाथ मेरे मस्तक पर रखते हैं और मुझ आत्मा को अपनी शक्तियों से भर रहे हैं... *63 जन्मों की थकान... 63 जन्मों के विकार... पल भर में दूर हो जाते हैं...*

➳ _ ➳ बापदादा के साथ मैं आत्मा... पहुँच जाती हूँ... मधुबन... जहां हज़ारों आत्मायें... *बाबा को मिलने... बाबा की एक नजर से निहाल होने आयें हैं...* मैं आत्मा फ़रिश्ता स्वरुप में डायमंड हॉल में भव्य अलौकिक नजारे को साक्षी होकर देख रही हूँ... ब्रह्मा बाबा के साथ खड़ी मैं आत्मा... देख रही हूँ... *एक दिव्य परम पवित्र ज्योति का अवतरण...* सभी आत्माओं की झोली...

प्यार का सागर... प्यार से भर रहा है... अखूट खजाने से सबको मालामाल कर रहा है... सभी आत्मायें... धन्यता से भरपूर हो गई हैं... *बापदादा के एक एक बोल को अपने मन बुद्धि में सुनहरे अक्षरों से अंकित करती सभी आत्मायें...* अलौकिक मिलन को अपनी स्मृति में छुपाकर अपने साथ लौकिक जीवन में लेकर जाते हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा... बापदादा के साथ सभी ब्राह्मण आत्मायें जो बाबा मिलन प्रत्यक्ष मनाकर आये थे... उनकी बाबा मिलन के बाद की स्थिति का अवलोकन करने चल पड़ती हूँ... बापदादा मेरा हाथ थाम कर ले चलते हैं मुझे सभी ब्राह्मण आत्माओं के लौकिक घर पर... सुख... शांति... पवित्रता से सजा हुआ वातावरण... *अलौकिक प्यार और अलौकिक पवित्रता के पालने में झूलते बच्चे... श्रीमत पर बलिहार जाते पवित्र गृहस्थ जीवन...* मन ख़ुशी में झूम उठा जब देखा *बाबा का झंडा* हर ब्राह्मण आत्मा के घर पर लहरा रहा हैं... *बापदादा की श्रीमत "व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क से किनारा करना"* को फॉलो कर हर ब्राह्मण आत्मायें अपने पुरुषार्थ को हाई जम्प दे रहे हैं... ब्राह्मण होने का प्रत्यक्ष सबूत हर सपूत बच्चा दे रहा हैं...

➳ _ ➳ बहुत सी ऐसी ब्राह्मण आत्माओं को भी देखा जो अलबेले थे... पुरुषार्थ के प्रति सजग नहीं थे... अपने ब्राह्मण संस्कारों को... व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क में उलझें हुए थे... *संगमयुग की अनमोल घड़ियों को व्यर्थ गवां रहे थे...* पुरुषार्थ से प्रालब्ध तक के रूहानी सफर को अलबेलेपन के संस्कारों द्वारा कांटों का जंगल बना रहे थे... व्यर्थ संकल्प... व्यर्थ कर्म... व्यर्थ बोल और व्यर्थ सम्बन्ध-संपर्क से किनारा नहीं कर पा रहे थे... *बापदादा अपनी शक्तियों रूपी रंग बिरंगी किरणों को सभी अलबेली ब्राह्मण आत्माओं पर फैलाने लगें... अपनी ज्ञान रूपी अनंत किरणों को सभी पर न्यौछावर कर रहे हैं...*

➳ _ ➳ सभी ब्राह्मण आत्मायें अपने अलबेले संस्कारों का त्याग कर... पुरुषार्थ की उड़ती कला के भागीदार बन गये हैं... चढ़ती कला के हक़दार बन गये हैं... बाबा की श्रीमत को सनहरे अक्षरों से मन बुद्धि में अंकित कर फॉलो

कर रहे हैं... उतरती कला से चढ़ती कला में परिवर्तन कर अपने कुल का उद्धार कर रहे हैं... *बापदादा का झंडा लहरा कर आने सपूत बच्चे होने का सबूत दे रहे हैं...* मैं आत्मा बापदादा के साथ यह परिवर्तन का दिव्य नजारा देख भाव विभोर हो जाती हूँ... अब तो घर घर में *बापदादा का झंडा* लहराता हुआ दिखाई दे रहा हैं... सभी आत्मायें बापदादा की बन चुकी हैं... व्यर्थ संकल्प... व्यर्थ बोल... व्यर्थ कर्म और व्यर्थ सम्बन्ध-संपर्क से मुक्त हो कर अपने बुद्धि को सिर्फ एक बाप में लगा रहे हैं... और मैं आत्मा... बापदादा का हाथ अपने हाथों में रख... *"व्यर्थ संकल्प... व्यर्थ बोल... व्यर्थ कर्म और व्यर्थ सम्बन्ध-संपर्क से किनारा करने का संकल्प करती हूँ... और संगमयुग की अनमोल घड़ियों को व्यर्थ न गवां कर समर्थ घड़ियों में परिवर्तित कर रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔